International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(III), July- September, 2025, pp. 89-98

मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक विश्लेषण

सूरज भान अहिरवार[1*] | डॉ. एम. एन. खान[2]

[1]शोधार्थी (भूगोल), महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्यप्रदेश।
[2]प्राध्यापक भूगोल, प्रभारी प्राचार्य, अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निवाड़ी, मध्यप्रदेश।

[*]Corresponding Author: surajbhan554@gmail.com

Citation: अहिरवारसूरज, & खानएम. एन. (2025). मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक विश्लेषण. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(III)), 89–98. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/7.3(iii).8095

सार

जनशक्ति के रूप में किसी क्षेत्र की जनसंख्या का मूल्यांकन उसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि क्षेत्र विशेष की जनसंख्या उसके सम्पूर्ण भौगोलिक व्यक्तित्व का परिचायक होती है। किसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या क्षेत्र के परिवेश मानव वर्गों के गुणों उद्देश्यों एवं प्राविधिकी क्षमताओं का प्रतिफल होती है। विभिन्न प्रकार की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए विविध जनसांख्यिकीय अभिलक्षणों जैसे– जनसंख्या की वृद्धि, वितरण, घनत्व, जन्म एवं मृत्यु दर तथा आर्थिक विशेषताओं के विश्लेषण के लिए जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक होता है। देश तथा प्रदेश के लिए उसकी जनसंख्या आर्थिक विकास का साधन एवं साध्य दोनों होती है क्योंकि मानवीय श्रम तथा तकनीकी कुशलता समस्त उत्पादनों का मूलाधार है। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक विश्लेषण करके बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप संसाधनों एवं खाद्यान्नों की आपूर्ति का विश्लेषण अपेक्षित है।

शब्दकोश: *संसाधन, अन्तरक्षेत्रीय, अन्तराक्षेत्रीय, प्रतिवेदन, विषमताऐं, कालिक, आरेखीय।*

प्रस्तावना

सामान्य मध्यप्रदेश राज्य कृषि प्रधान देश है यहाँ की कृषि में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत कुल कार्यशील जनसंख्या का 70% है क्योंकि प्रदेश के निवासी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कृषि संसाधनों से करते हैं। कृषि भूमि में वृद्धि के कारण प्रदेश में वन क्षेत्र चारागाहों, बाग–बगीचों एवं परती भूमि निरंतर कम होती जा रही है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए मध्यप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि पुरुष–स्त्री अनुपात, ग्रामीण–शहरी अनुपात अनुपात के साथ–साथ उनका कालिक एवं स्थानिक विश्लेषण अपेक्षित है क्योंकि इन सभी में विषमता जनसंख्या असमान वृद्धि की जननी है।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

मध्य प्रदेश भारत के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इस प्रदेश का अक्षांशीय विस्तार 21°6' देशांतर से 26°54' उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 74° से 82°47' पूर्व है कर्क रेखा 23°N राज्य के मध्य से होकर गुजरती है। वर्तमान मध्यप्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 308252 वर्ग किलोमीटर है जो भारत के 9.38% प्रतिशत है। इस प्रकार क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान के बाद द्वितीय स्थान पर है।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

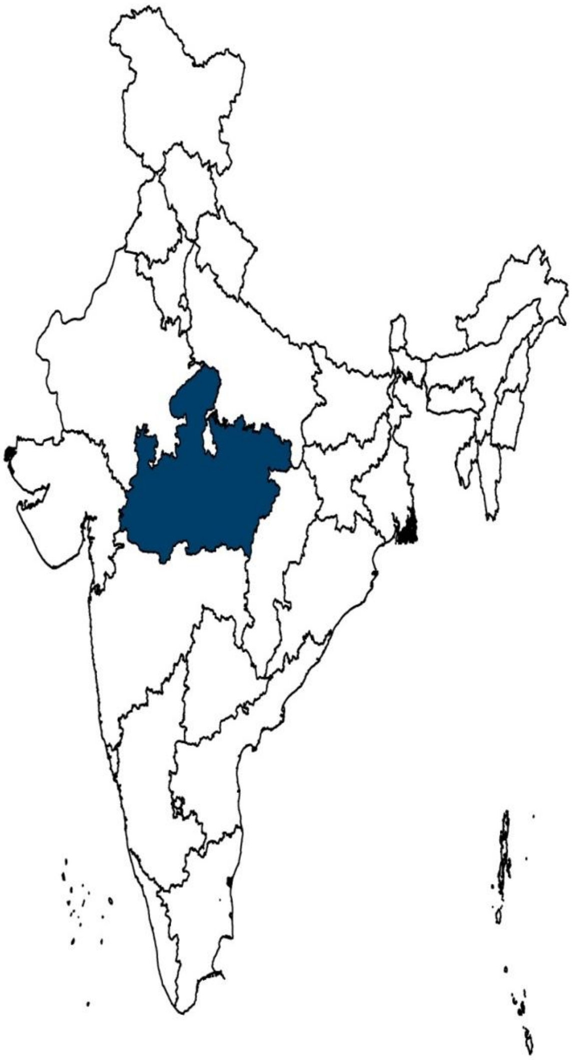

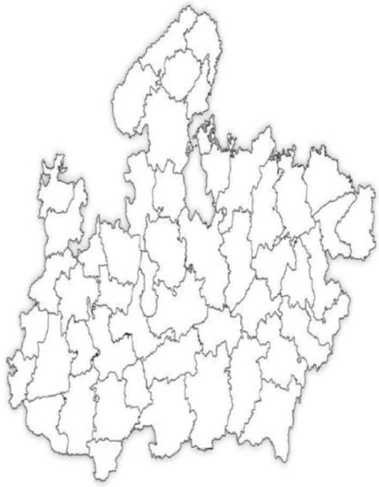

राज्य पुनर्गठन 01 नवंबर 2000 के अनुसार मध्यप्रदेश में 10 संभाग तथा वर्तमान समय में मध्यप्रदेश राज्य में 55 जिले हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की जनसंख्या 7,26,26,809 है जो सम्पूर्ण राष्ट्र की कुल जनसंख्या का 6% है। इस दृष्टि से देश में इसका सातवां स्थान है।

विधि तंत्र (Methodology)

प्रस्तुत शोध पूर्णतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है, जो भारत की जनगणना 1901 से 2011 तक के दशाब्दिक जनगणना प्रतिवेदन सीरीज–13 मध्यप्रदेश पार्ट 11-A, जनरल पॉपुलेशन टेब्लिस से लिए गए हैं। जिसका स्रोत जनगणना परिचालन, संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल है। सभी दशकों के जनगणना समंक प्रकाशित प्रतिवेदनों एवं ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त किए गए हैं। समंक संकलन के पश्चात् उनका सारणीकरण किया गया, जिसमें सारणी के शीर्षक, उपशीर्षक, सारणी स्त्रोतों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। समंको का प्रस्तुतीकरण सीधे न करके प्रतिशत ज्ञात करके स्पष्ट किया गया है, जो अपेक्षाकृत अधिक ग्राह है। सारणियों के आधार पर समंकों का एकविमीय तथा द्विविमीय आरेखों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करके जनसंख्या वृद्धि से संबंधित तथ्यों का स्पष्टीकरण किया गया है। जनसंख्या के संबंधित कतपय समंकों का मानचित्रण मात्रात्मक

विधियों से किया गया है। श्रेणी विश्लेषण के लिए मानक इकाई जिला को माना गया है। वर्णमात्री विधि के द्वारा मानचित्रण करके अन्तरक्षेत्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया, जिसमें जनसंख्या वृद्धि की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को प्रदर्शित किया गया है। अन्तराक्षेत्रीय विश्लेषण करने के लिए मध्यप्रदेश से संलग्न राज्यों एवं भारतवर्ष से तुलना करके क्षेत्रीय व्यक्तित्व में प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। विभिन्न जनगणना प्रतिवेदनों के आधार पर मध्यप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि का कालिक विश्लेषण किया गया, जिससे जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं।

जनसंख्या वृद्धि (Population Growth)

मध्यप्रदेश की जनसंख्या में सन् 1901 से 2011 तक विभिन्न दशकों में असामान्य वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। केवल सन् 1911 से 1921 के दशक में जनसंख्या में ह्रास हुआ। 1911 में प्रदेश की कुल जनसंख्या 14249382 थी, जो 1921 में घटकर 1,39,06,774 हो गई। इस प्रकार इस दशक में 3,4 2,608 व्यक्ति कम हो गए और कुल जनसंख्या में 2.40 प्रतिशत का ह्रास हुआ। इसी प्रकार इस दशक ग्रामीण जनसंख्या में 3.42 प्रतिशत और नगरीय जनसंख्या में 8.93 प्रतिशत का ह्रास हुआ। इस दशक में जनसंख्या ह्रास का कारण सूखा, अकाल, अनावृष्टि के अतिरिक्त विभिन्न संक्रमित बीमारियाँ हैं। जैसे– हैजा, प्लेग, चेचक आदि के कारण लोगों की मृत्यु हुई तथा जनस्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण पर्याप्त उपचार प्राप्त नहीं हुआ। यदि हम समेकित इस रूप से 1901 से 2011 की औसत वृद्धि का आकलन करें तो स्पष्ट होता है की जनसंख्या में इन 110 वर्षों में 472.80 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि भारत वर्ष में इस अवधि में वृद्धि दर 407.92 प्रतिशत थी। इससे स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि की दर विगत 110 वर्षों में देश की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक रही है, जो एक विचारणीय प्रश्न है। प्रदेश में आगामी दशकों में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत सन् 1921 की तुलना में 1931 में 10.21 प्रतिशत तथा सन् 1931 की तुलना में सन् 1941 में 12.06 प्रतिशत तथा तथा सन् 1941 से 1951 के दशकों में भारत से पाकिस्तान पृथक हो जाने के कारण देश की जनसंख्या की ही नहीं अपितु मध्यप्रदेश राज्य से भी वृद्धि के प्रतिशत में गिरावट आई है। इस दशक में वृद्धि का प्रतिशत 8.38 था। जबकि भारत में 13.22 की वृद्धि हुई। इस प्रकार इस दशक में देश की तुलना में मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत और भी काम रहा। सन् 1951 के बाद सन् 1961 से 1991 के चार दशकों में जनसंख्या वृद्धि की दर भारत की तुलना में मध्यप्रदेश में अधिक रही। तथा 1951 से 1991 के चार दशक में मध्यप्रदेश में जनसंख्या की औसत वृद्धि 160.89 प्रतिशत थी। जबकि इन दशकों में भारतवर्ष की वर्ष की औसत जनसंख्या वृद्धि दर 137.37 प्रतिशत रही। अध्ययन दशक के 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत प्रदेश में 20.37 था इससे स्पष्ट होता है कि विगत चार दशकों में जनसंख्या वृद्धि की दर सन् 1951 की तुलना में सन् 1961 में 24.73 प्रतिशत सन् 1961 की तुलना में सन् 1971 में 28.28 प्रतिशत एवं सन् 1971 से 1981 के मध्य 27.16 प्रतिशत और सन् 1981 से 1991 के मध्य 27.24 प्रतिशत थी। इसके बाद के दशकों में क्रमशः सन् 1991 से 2001 के दशक में 24.34 प्रतिशत तथा 2001 से 2011 के दशक में 20.37 प्रतिशत थी इससे स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता कल के चार पूर्ववर्ती दशकों की तुलना में वर्तमान दो दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई है जिसका कारण जन जागरूकता, शिक्षा, सीमित परिवार की बढ़ती प्रवृत्ति ग्रामीण साक्षरता, दृश्य–श्रव्य माध्यमों से ग्रामीण जनों में सीमित परिवार की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन है। उदाहरण के लिए शासकीय कर्मचारियों को एक बच्चे के बाद दो वेतन वृद्धियाँ तथा दो बच्चों के बाद एक वेतन वृद्धि का प्रावधान तथा प्रसूति के दौरान महिलाओं को प्रोत्साहन राशि का प्रावधान उल्लेखनीय है। उपर्युक्त विवरण के आधार पर जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का अध्ययन 4 वर्गों चार से वर्गों में बाँटकर किया जा सकता है–

- अनियमित जनसंख्या वृद्धि का काल (1911–1921)
- नियमित जनसंख्या वृद्धि का काल (1901–1951)
- तीव्र जनसंख्या वृद्धि है काल (1951–1971)
- वृद्धि दर में क्रमिक ह्रास का कल (1971–2011 और इसके बाद की अवधि)

विगत दो दशकों में वृद्धि दर दर घटने का यह भी कारण रहा है जन्म दर घटी है तथा राज्य के निकटवर्ती प्रांतों में बड़ी जनसंख्या का पलायन भी है। भारत सरकार की यह भी नीति है कि निर्वाचन के दौरान यदि किसी उम्मीदवार अभ्यर्थी के दो से अधिक बच्चे हैं उन्हें निर्वाचन प्रक्रिया में भाग लेने भाग लेने से वंचित किया जाता था। प्रक्रिया में अभ्यर्थी को हैसियत से सहभागी नही हो सकता।

निम्नलिखित सारणी एवं चित्र 01 में प्रदेश में कुल जनसंख्या एवं ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की दशताब्दी की वृद्धि को दर्शाया गया है–

उपरोक्त सारणी क्रमांक–01 में मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में दशब्दिक वृद्धि सन् 1901 से 2011 तक दर्शाया गया है। कुल जनसंख्या के अतिरिक्त ग्रामीण जनसंख्या की दशब्दिक वृद्धि के अपेक्षा ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की दशब्दिक वृद्धि की प्रवृत्ति प्रायः भिन्न है। जहाँ एक ओर ग्रामीण जनसंख्या में दशब्दिक वृद्धि का प्रतिशत भारत की तुलना प्रायः प्रत्येक दशक में अधिक रही है

सारणी 1: मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि 1901 से 2011 तक

वर्ष	जनसंख्या	दशक परिवर्तन	प्रतिशत वृद्धि दर		
			कुल	ग्रामीण	नगरीय
1901	12679214	–	–	–	–
1911	14249382	+26928596	12.38	15.21	–11.82
1921	13906774	–342608	–2.40	–3.42	8.93
1931	15326879	+1420105	10.21	8.95	22.62
1941	17175722	+1848843	12.06	9.85	31.46
1951	18614931	+1439209	8.38	4.82	34.52
1961	23217910	+4602979	24.73	22.13	39.57
1971	30016625	+6798715	29.28	26.26	44.31
1981	38168517	+8151882	27.16	21.28	52.92
1991	48566242	+10397735	27.24	22.44	43.92
2001	60335118	+11818876	24.34	22.09	31.19
2011	72626809	+12291691	20.37	18.42	27.15

स्त्रोत– Censis of India 2011, Series 13 Madhya Pradesh General Population tables part-II ।

वहीं नगरीय जनसंख्या में दशब्दिक वृद्धि सन् 2001 की तुलना में सन् 2011 के दशक में ऋणात्मक अर्थात् 11.82 प्रतिशत हुई, जिसका कारण मध्यप्रदेश में ही नहीं भारत के अन्य राज्यों में नगरीकरण की गति अत्यन्त मंद थी क्योंकि औद्योगिक विकास तथा वाणिज्य एवं व्यापार के क्रियाकलाप अति सीमित थे। यदि हम ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि का आकलन करें तो ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि की प्रवृत्ति कुल जनसंख्या के प्रायः समतुल्य ही है। सारणी 01 से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि सन् 1971 के बाद दशकों में सन् 2011 तक ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि का प्रतिशत निरंतर घट रहा है। इसके विपरीत नगरीय जनसंख्या में वृद्धि का प्रतिशत प्रारंभिक वर्षों 1901 से 1981 तक निरंतर बढा है 1991 के बाद के दशकों में जन– जागरूकता, शिक्षा, परिवार कल्याण कार्यक्रम को प्रोत्साहित के कारणों द्वारा नगरीय जनसंख्या वृद्धि में ह्रास की प्रवृत्ति है। 19वीं सदी के उत्तरार्ध के अंतिम दशकों में यह स्लोगन था कि– **"पहला बच्चा अभी नहीं, दूसरा जल्दी नहीं और तीसरे के बाद कभी नहीं"** इसके बाद सरकार की जनसंख्या नीति में परिवर्तन होने होने से **"हम दो और हमारे दो"** तथा **"पहला बच्चा अभी नहीं, दो के बाद कभी नही"** का नारा लोकप्रिय हुआ। जबकि वर्तमान नारा यह है की **"बच्ची हो या बच्चा, एक ही अच्छा"**।

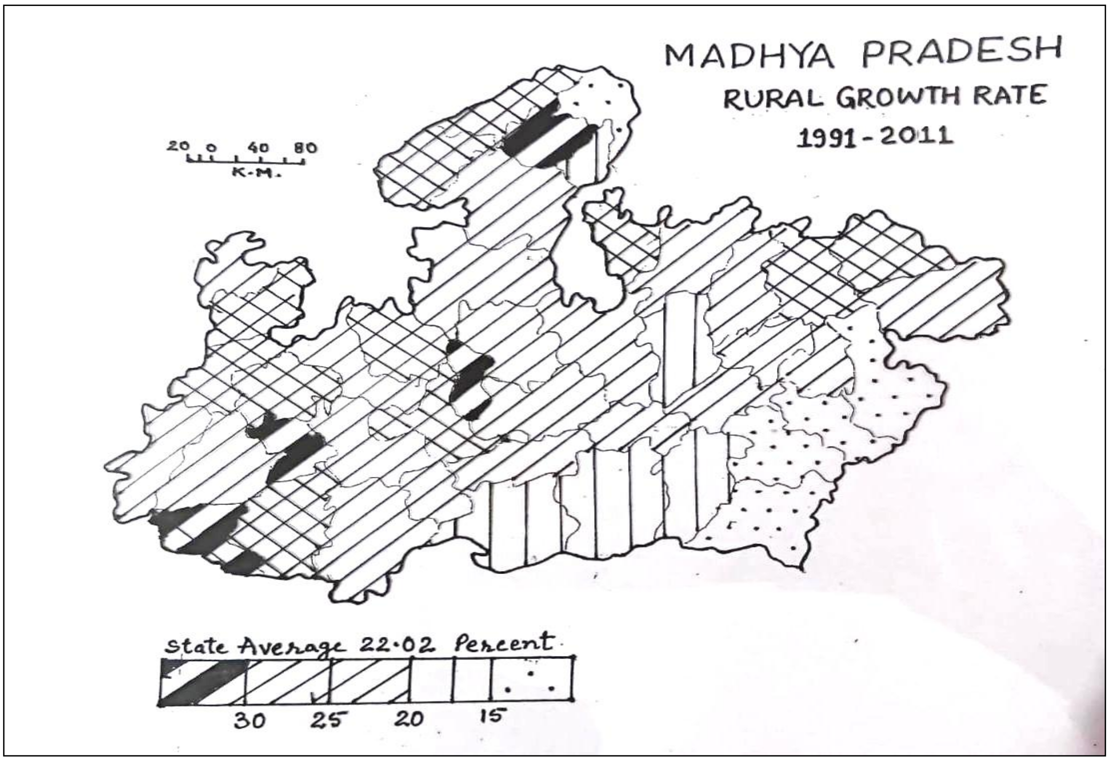
MADHYA PRADESH
RURAL GROWTH RATE
1991-2011
20 0 40 80
K.M.
State Average 22.02 Percent
30 25 20 15

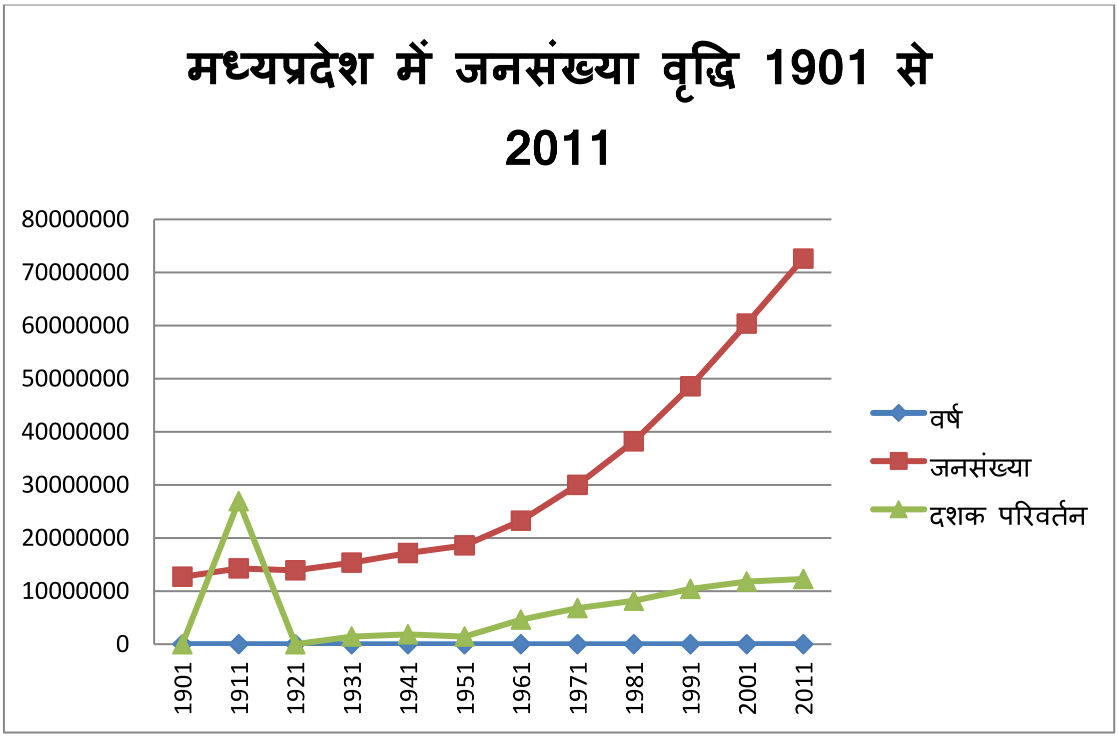
मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि 1901 से 2011
80000000
70000000
60000000
50000000
40000000
30000000
20000000
10000000
0
1901 1911 1921 1931 1941 1951 1961 1971 1981 1991 2001 2011
वर्ष
जनसंख्या
दशक परिवर्तन

सारणी 2: मध्यप्रदेशः जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

वर्ष	कुल जनसख्या (लाख में)	पुरूष जनसंख्या (लाख में)	महिला जनसंख्या (लाख में)	वृद्धि दर (प्रतिशत में)			लिंगानुपात
				कुल वृद्धि	पुरूष वृद्धि	महिला वृद्धि	
1901	126.79	–	–	–	–	–	–
1911	412.49	70.45	70.03	12.39	–	–	967
1921	139.06	71.33	67.73	–2.40	–1.54	–3.29	949
1931	153.26	78.71	74.55	10.21	10.34	10.07	947
1941	171.75	88.25	63.50	12.06	12.12	12.00	946
1951	186.15	95.71	90.43	8.37	8.45	8.30	945
1961	232.17	120.20	111.97	24.72	25.57	23.82	932
1971	300.16	156.30	143.86	29.28	30.03	28.47	920
1981	381.68	196.66	183.01	27.15	27.10	27.21	921
1991	485.66	253.94	231.71	27.24	27.82	26.60	912
2001	603.85	314.56	289.28	24.33	23.87	24.84	920
2011	726.26	376.12	350.14	20.35	19.60	18.12	931

स्त्रोत– Censis of India 2011, Series 13 Madhya Pradesh General Population tables part-II ।

जनसंख्या वृद्धि को उपरोक्त सारणी क्रमांक–01 के अतिरिक्त पुरुष महिला जनसंख्या वृद्धि को भी सारणी एवं चित्र–02 में प्रदर्शित किया गया है जिसे स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि की दर पुरुष एवं स्त्री में भी प्रायः कुल जनसंख्या के दशाब्दिक वृद्धि के अनुरूप ही है। सन् 1961 के बाद के दशकों में पुरुष एवं महिला की दशाब्दिक वृद्धि की दर सन् 1991 तक अधिक रही इसके बाद के वर्षों में 2001 से 2011 के दशक में पुरुष–महिला जनसंख्या वृद्धि में कमी दृष्टिगत होती है। सारणी क्रमांक–02 में यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में लिंगानुपात में भी अनुपातिक वृद्धि पाई गई। प्रारम्भिक वर्षों में एक हजार पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या लगभग समतुल्य थी, लेकिन आगामी वर्षों में यह अनुपात निरन्तर घट रहा है जिसका कारण देश प्रदेश दोनों में पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था वर्तमान में भी विद्यमान है। अतः स्त्रियों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा पर अधिक बल नहीं दिया गया।

सारणी क्रमांक–02 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि वर्ष 1921 में पुरुष जनसंख्या वृद्धि –1.54 प्रतिशत ऋणात्मक रही। जबकी स्त्री जनसंख्या वृद्धि –3.29 प्रतिशत ऋणात्मक रही है। अतः 1921 के दशक में स्त्री एवं पुरुष जनसंख्या वृद्धि दर ऋणात्मक रही थी। 1931, 1941, 1951 में जहाँ पुरुष जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत क्रमशः 10.34% 12.31% एवं 8.45 प्रतिशत हुई वहीं उक्त वर्षों में स्त्री जनसंख्या वृद्धि क्रमशः 10.7% 12.00% तथा 8.30% की रही है। वर्ष 1961, 1971, 1981, 1991 एवं 2001 में पुरुष जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत क्रमशः 25.57%, 30.03%, 27.10%, 27.82% तथा 23.87% की हुई है। जबकि इन्हीं वर्षों में स्त्री जनसंख्या वृद्धि क्रमशः 23.82%, 28.47%, 27.21%, 26.60% और 24.84% की रही है। इसी प्रकार वर्ष 1921 के बाद से 2011 तक के 9 वर्षों में 325% रही। वहीं इन्हीं 9 दशकों में पुरुष एवं स्त्री जनसंख्या में वृद्धि का प्रतिशत क्रमशः 347. 09% एवं 325.26% की वृद्धि हुई।

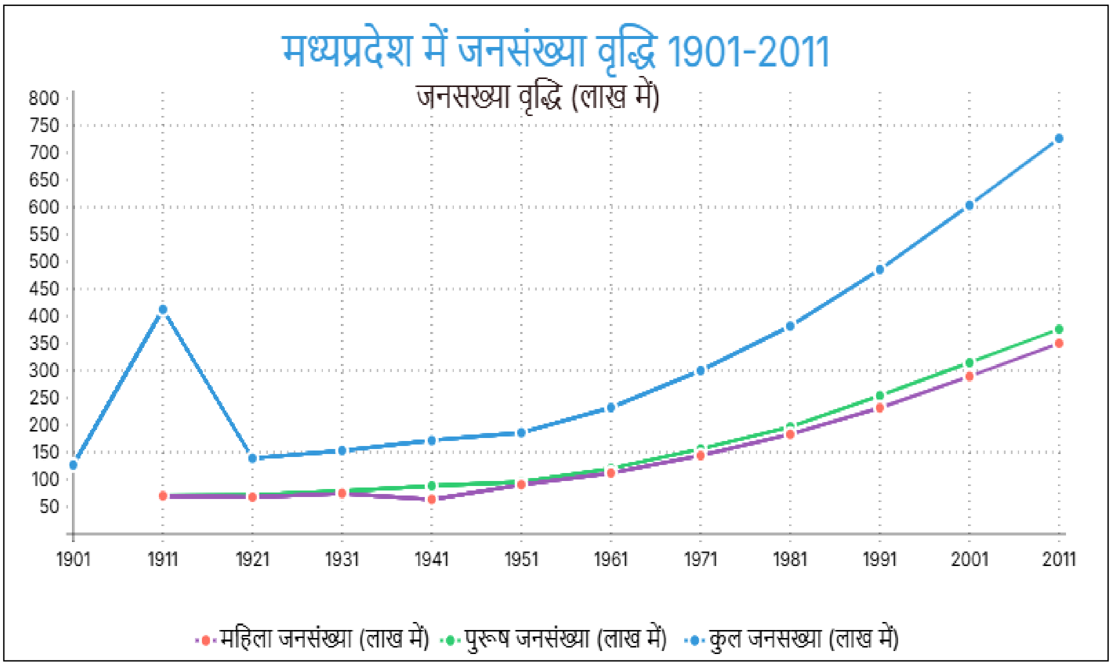
मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि 1901-2011
जनसख्या वृद्धि (लाख में)
800
750
700
650
600
550
500
450
400
350
300
250
200
150
100
50
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
1991
2001
2011
महिला जनसंख्या (लाख में)
पुरूष जनसंख्या (लाख में)
कुल जनसख्या (लाख में)

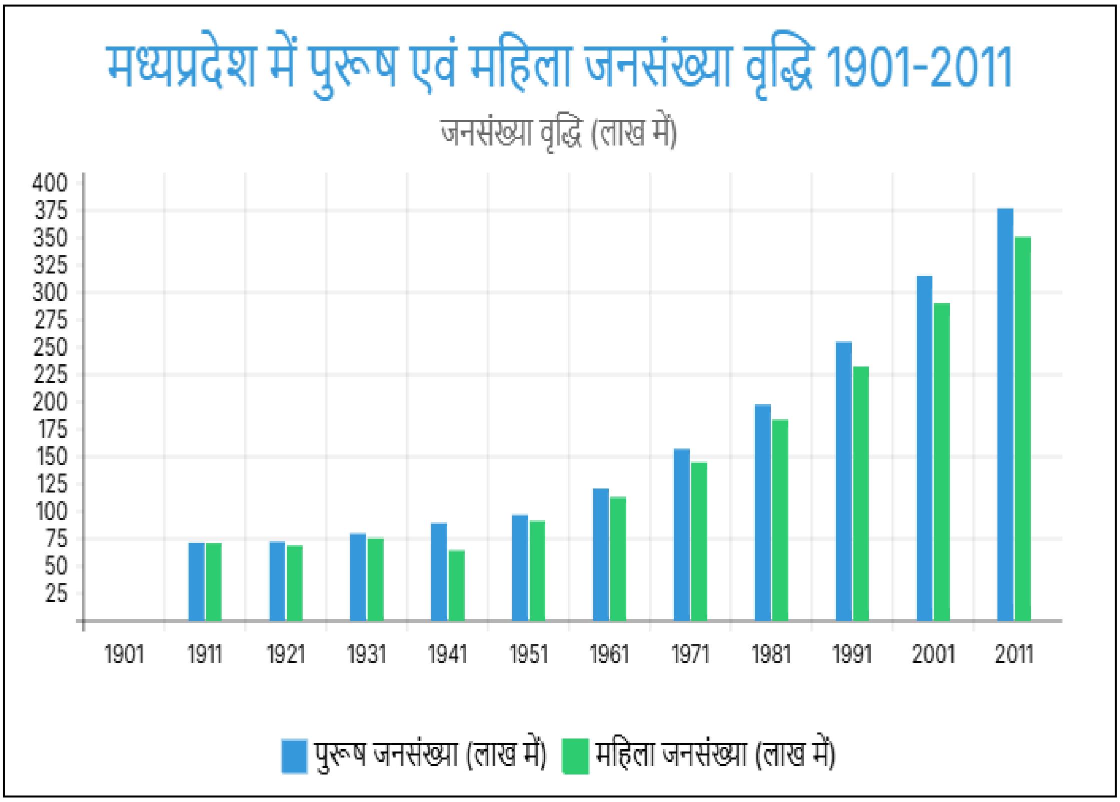
मध्यप्रदेश में पुरूष एवं महिला जनसंख्या वृद्धि 1901-2011
जनसंख्या वृद्धि (लाख में)
400
375
350
325
300
275
250
225
200
175
150
125
100
75
50
25
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
1991
2001
2011
पुरूष जनसंख्या (लाख में)
महिला जनसंख्या (लाख में)

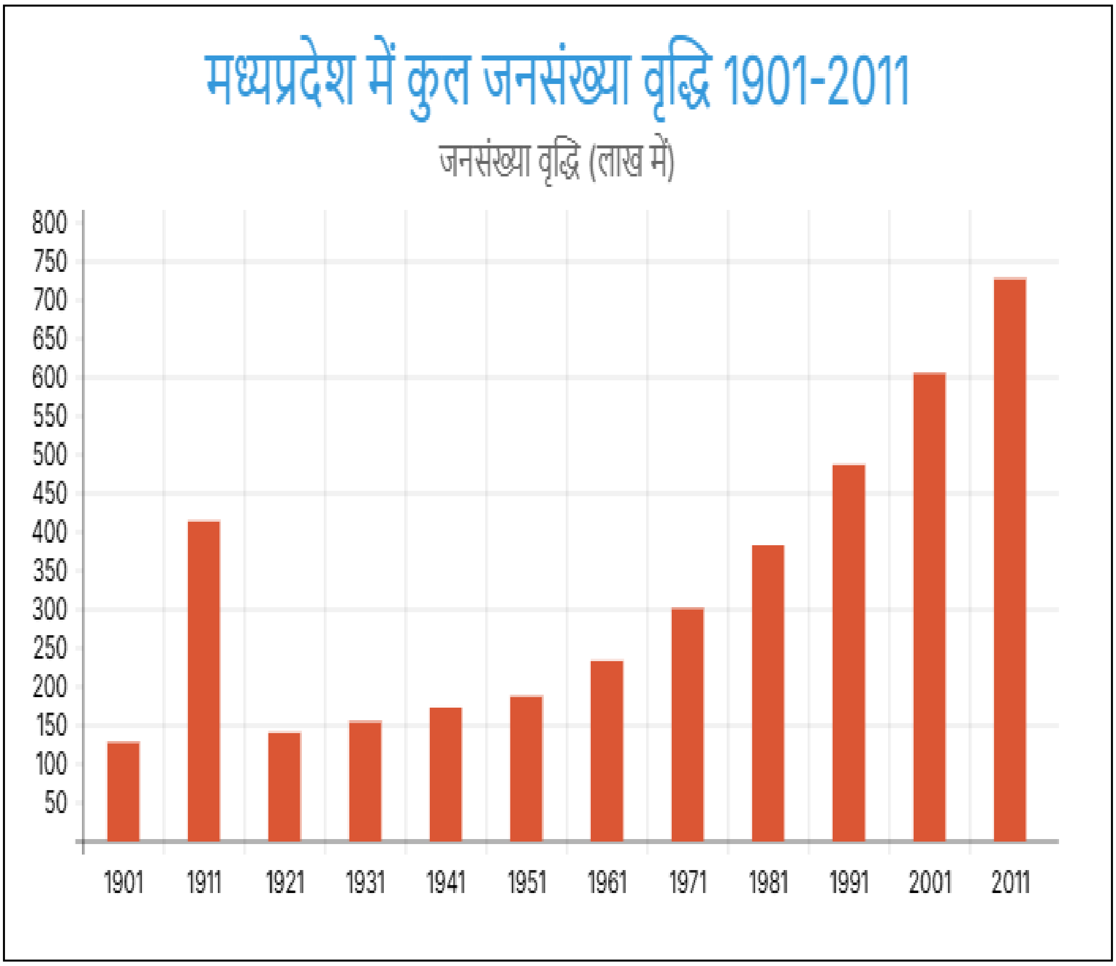

जनसंख्या वृद्धि की स्थानिक भिन्नता

मध्य प्रदेश के 55 जिलों में जनसंख्या वृद्धि की स्थानिक भिन्नता का आंकलन करने पर निम्नलिखित क्षेत्र परिलक्षित होते है।

- उच्चतम वृद्धि वाले क्षेत्र
- उच्च वृद्धि वाले क्षेत्र
- मध्यम वृद्धि वाले क्षेत्र
- निम्न वृद्धि वाले क्षेत्र
- निम्नतम वृद्धि वाले क्षेत्र

उच्चतम वृद्धि वाले क्षेत्र

जनसंख्या की दृष्टि से प्रदेश के सर्वाधिक वृद्धि वाले इंदौर एवं भोपाल हैं इन दोनों जिलों के जिला मुख्यालय भोपाल एवं इंदौर महानगर की श्रेणी में आते हैं जहाँ नगरीय जनसंख्या का संकेंद्रण प्रदेश के अन्य जिलों की तुलना में अधिक हुआ है। इन जिलों में सन् 2001 की तुलना में सन् 2011 में जनसंख्या में 32.88 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है। भोपाल राजधानी होने के कारण औद्योगिक, राजनैतिक और परिवहन की सुविधाएँ सर्वाधिक हैं और यहँ 26.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इनका औसत वृद्धि दर 30.75 प्रतिशत है।

उच्च वृद्धि वाले क्षेत्र

उच्च वृद्धि वाले क्षेत्र सीधी (33.28%), बड़वानी (29.87%), श्योपुर (29.72%) तथा सीहोर (28.22%) सम्मिलित हैं ये जिले राज्य के उत्तर–पश्चिम पूर्व तथा वर्तमान पश्चिम की ओर स्थित है। इसके अतिरिक्त पश्चिमी निवाड (27.95%), टीकमगढ़ (27.88%), रायसेन (27.80%) तथा सतना (27.52%) आदि जिले भी उच्च वृद्धि वाले हैं। इसमें सतना को छोड़कर सभी कृषि प्रधान हैं।

मध्यम/औसत/सामान्य वृद्धि वाले क्षेत्र

राज्य के 17–20% वृद्धि वाले जिले 10 है जिनमें दमोह (20.41%), पूर्वी निवाड. (19.31%), शहडोल (18.87%), बैतूल (18.02%), छिन्दवाडा (17.87%), भिण्ड (19.06%) उल्लेखनीय है यह सभी जिले प्रायः कृषि प्रधान जिले है।

निम्न वृद्धि वाले क्षेत्र

इन जिलों में 12–16% तक की जनसंख्या वृद्धि हुई। सिवनी (16.41%), मण्डला (14.66%), डिण्डोरी (13.22%) तथा बालाघाट (12.40%) शामिल है।

न्यूनतम वृद्धि वाले क्षेत्र

इन जिलों में विगत दशकों में 5.87% की ही जनसंख्या वृद्धि हुई है।

उपरोक्त जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राज्य के कृषि प्रधान जिलों में जनसंख्या वृद्धि अधिक हुई है। नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि का कारण औद्योगिक विकास के कारण रोजगार की प्राप्ति।

जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव उल्लेखनीय है–

- जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रित के लिए गठित "मध्यप्रदेश जनसंख्या परिषद्" के द्वारा समय–समय पर जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण के लिए विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं। जिससे जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित किया जा सके एवं जनसंख्या की नियोजित वृद्धि हो सके।
- प्रारंभिक प्रौढ़ एवं शिक्षा क्रियात्मक को शिक्षा साक्षरता प्रोत्साहित किया जाना तथा समाज कल्याण की योजनाओं पर बल।
- बाल–विवाह नियंत्रण कानून को प्रभावित तरीके से लागू किया जाना जिसके लिए विवाह पंजीयन को अनिवार्य किया जाए।
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना के लिए बजट में अधिक राशि का प्रावधान किए जाए तथा देशी चिकित्सा पद्धतियों का जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों में उपयोग किया जाए। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का विशेष बल दिया गया है जिससे लोगों को परिवार कल्याण कार्यक्रम से जोड़ा जा सके।
- प्रत्येक ग्राम में महिला कल्याण सहायिका की नियुक्ति तथा उन्हें सम्मान जनक मानदेय तथा यात्रा भत्ता का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन।
- गर्भ–निरोधक सामग्री स्वास्थ्य विभाग एवं सहकारी समितियों एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली से प्रदान की जाए।
- युवक–यूतियों को जनसंख्या नियंत्रण में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए एवं रोजगार के अवसर प्रदान किए जाए।

- लोकसंगीत, लोककला एवं लोकनाट्य के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण पर जोर दिया जाए इसके लिए स्वयंसेवी संगठनों, धार्मिक एवं महिला संगठनों को पर्याप्त अनुदान प्रदान किया जाए।
- प्रत्येक गाँव में परिवार कल्याण समिति गठित की जाए जिसमें विभिन्न धर्मो के लोग सम्मिलित किए जाए जिससे जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित हो सके।
- जनसंख्या परिषदों के द्वारा समय–समय पर मॉनिटरिंग तथा मूल्यांकन किया जाए तथा अपेक्षित स्वास्थ्य प्रशिक्षण दिए जाए।

उपयुक्त प्रस्तावित सुझावों के अतिरिक्त स्थानीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जा रही सेमिनार एवं वेबीनार के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण पर बल दिया जाना अपेक्षित है। स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन करके यह सुनिश्चित किया जाए की जनसंख्या वृद्धि संसाधनों के अनुपात में है या अधिक है।इसके लिए संपोषित विकास पर बल दिया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

जनसंख्या वृद्धि का कालिक एवं स्थानिक विश्लेषण करने के बाद निष्कर्षतः मध्यप्रदेश में क्षेत्रफल की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की दर चिंताजनक नहीं है। प्रदेश का क्षेत्रफल अधिक होने के साथ–साथ कृषि पर निर्भरता तथा औद्योगिक विकास पर बल देने का के कारण वृद्धि की दर समानुपाती है। आवश्यकता इस बाल बात की है कि प्रयुक्त कृषि क्षेत्र का क्षैतिज विस्तार सीमित करके उर्ध्वाधर विस्तार को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सरकार की वर्तमान नीति के अनुरूप अधिक से अधिक लोगों को प्रशिक्षित करके कृषि एवं पूरक उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाना तथा स्थानिक संसाधनों के अनुरूप लघु इकाइयों की स्थापना के लिए अनुदान कम ब्याज पर देने की आवश्यकता है, जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या का पलायन रूकेगा। शिक्षा का प्रसार भी बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए प्रभावी पहल होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. आर.सी. चाँदना (1999): जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, लुधियाना
2. बी.पी. पण्डा एवं एल.एन. वर्मा (2024): जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
3. एच. लाल (2011): जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, ढउदपुर, गोरखपुर
4. एस.डी. मौर्य (2010): जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भावन, प्रयागराज
5. प्रार्मिला कुमार (2007): जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
6. जय प्रकाश मिश्रा (2014): जनसंख्या भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
7. चतुर्भुज मामोरिया एवं संतोष दांगी (2018): साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
8. Census of India (2011), Madhya Pradesh series 24 Part-XIIB, District Census Handbook Chhatarpur, Panna, Tikamgarh, Damoh, and Sagar, Directorate of Census operations Madhya Pradesh

❑❑❑